December 2014

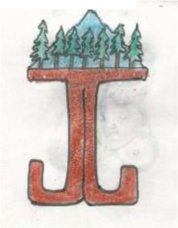

जंगली जागरन

जंगली स्कूल के बारे में

(-अल्का और भानु)

जंगली स्कूल 29 नवम्बर 2011 को शुरू हुआ।यह स्कूल पाँच बच्चों से शुरू हुआ क्योंकि सभी बच्चे इंग्लिश बोलना सीखना चाहते थे। तब सभी ने मलिका नानी से बात की और हम सब उनके घर सुबह 5:30 बजे से 8:00 बजे तक पढते थे। दो महीने तक हम ऐसे ही रोज़ सुबह पढ ने जाया करते थे तब तक जंगली स्कूल में लगभग 12 बच्चे आ चुके थे। उसके बाद हमें पढाने के लिए और लोग भी आने लगे। मलिका नानी के बाद हमें थियो नाना जी ने मशरुम, वनस्पतियों, नदियों और पृथवी के बारे में अनेक जानकारीयां दीं। दूसरे जगह, देश से आए हुए लोग भी हमें कुछ नया सीखाने लगे। करूणा, एलिस्टर के साथ हम सुबह- सुबह घुमने जाते थे और वे हमें आस पास की जानकारी देते थे। सिद्धू और पल्लू ने कलरी पायटू सिखाया। यह दक्षिण भारत की लड़ने की बहुत पुरानी कला है। डैन ने बीट बोक्सिंग, अनुपमा जी ने स्टोरी मेकिंग, श्रुति और कमला ने कन्नड़ गीत सिखाया। उसके बाद जंगली स्कूल की एक लायब्रेरी भी खोली गई, सभी बच्चे पुस्तकालय में हर रविवार को आते हैं। पुस्तकालय को व्यवस्थित करने में कंचन दी ने और लक्ष्मी और करुणा दीदी ने मदद की। पाद में लावन्या और शारदा दी ने भी की। और राखी जी और सुप्रिता जी ने इसके लिये किताबें लाने में मदद की। एक संस्थान (HEF) ने हमें कम्प्यूटर दिलाये। सभी बच्चे सुबह -शाम कम्प्यूटर क्लास जाते थे, राम दा और जॉर्डन ने कम्प्यूटर के पार्टस के बारे में बताया। अरविंद गुप्ता की कबाड़ से जुगाड़ वाली सी.डी. देखकर कई खिलौने बनाये। लावन्या दीदी के साथ हमने कई कहानियां लिखी। एप्रिल ने हमें क्ले से खिलौने बनाने सिखाए। मई के महिने हमारे गाँव में मेसर कुंड का मेला होता है और जंगली स्कूल के सभी बच्चे यहाँ श्रमदान करते हैं। जो दूसरे बच्चे जंगली स्कूल में जुड़ना चाहते हैं तो वे भी श्रमदान में आते हैं। 2014 में भी मई में पक्षी त्यौहार हुआ जिसमें बच्चो ने दीबा दी के साथ मिलकर कई पक्षियो के चित्र बनाये। आशीष कोठारी जी जो की खुद एक बर्डवाचर हैं, उनके साथ चिड़ियो को देखने के लिए जंगल में गये । हम सब भावना (भानु) दीदी के साथ खलिया टौप घूमने गये और वह ट्रिप बहुत मजेदार रही। जन्नू दा ने हमें गिटार, रैपलिंग और कैम्पिंग सिखाया और उनके साथ हम पाताल भुवनेश्वर भी गये। डबलिन स्कूल वालो ने हमें टेलिस्कोप से तारे और चंद्रमा के बारे में जानकारी दी। एरिक ने हमें बेसबौल खेलना सिखाया। अभी हम अरविंद भैया के साथ दौड़ रहे हैं। और जो जंगली जागरण आप पढ रहे है, इसे बनाने में हमारी मदद शिबा दी ने की है। अब हमारे स्कूल में 35 सदस्य है।

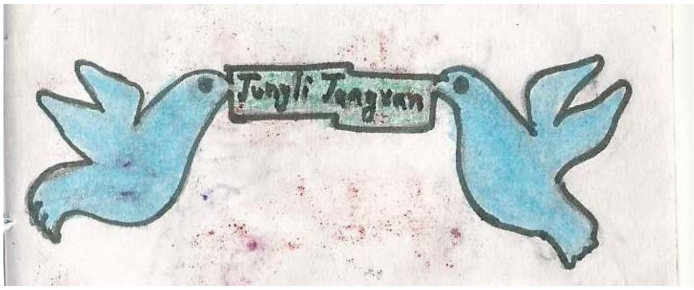

हमारे कुछ संदेश

बच्चों की भावनाओं का सम्मान करें।

हमें जिस काम में दिलचस्पी है उसके लिए हमारा साथ देना चाहिए, उससे रोकना नहीं।

भालु के हमले:

अक्टूबर से भालू के 5 हमले हो चुके हैं। अभी धरमुड़ा और उनके पोते पर हुआ। वह जंगल से लकड़ी लेने जा रहे थे।

लड़कियों को लड़कों से कम मत समझें।

पढाई के बारे में-

हम सब अलग हैं। सभी एक ही चीज़ में अच्छे नहीं हो सकते।

हमें आवाज़ करने पर मारें नहीं।

मस्ती करना बुरी बात नहीं।

समझा कर पढाएं।

आस-पास के बारे में-

पानी बचाएं और उसके स्त्रोतों को गंदा न करें ।

पक्शी न मारें और पेड़ न काटें।

प्लास्टिक कम यूस करें और कूड़ा न फैलाएं।

सामाजिक जगहों को सुंदर और साफ रखें।

नदी सूत्रा- जन्नु दा और थिओ नाना एक कायाक में बैठ कर तन्नकपुर से बंगाल तक की नदी की यात्रा पर निकल गए हैं। वह नदी को और उसकी कहानियों को जानना चाहते हैं।

बैंड पर बाघ: *27* नवंबर को मलिका नानी ने सरमोली बेंड पर एक बाघ (लेपर्ड) देखा।

जंगली स्कूल का बर्थडे: 29 नवंबर को हमने जंगली स्कूल का बर्थडे मनाया। हमने पूरी चना खाया, फिल्में देखीं और टेलिस्कोप से चाँद को देखा। हमें बेसबॉल कैप मिली।

पत्रिका टीम

अल्का (क्लास 11): मुझे घूमना, चित्र बनाना पसंद है। मैं फोटोग्राफी और स्केटिंग सीखना चाहती हूँ।

भावना (भानु) : मुझे बैडमिंटन खेलना और अपने दोस्तों के साथ घूमना पसंद है।

कविराज (कब्बू) (क्लास 11): मुहे घूमना और मस्ती करना पसंद है। मुझे शतरंज और फुटबॉल खेलना अच्छा लगता है।

महिमा 7^{th} क्लास (11 साल): मुझे बैडमिंटन, कैरम और घूमना पसंद है। मुझे अपने बाल बांधना अच्छा नहीं लगता।

मुकेश सिंह सुमतियाल (क्लास 6) : मुझे खाना पकाना और खाना, पेड़ो से लटकना और गीत गाना पसंद है। मैं पिज़्ज़ा खाना चाहता हूं।

नेहा (क्लास 6) : मुझे छोटे जानवर, सुन्दर चीज़ें और चीनी के परांठे पसंद है।

निशांत पांगती (क्लास 8) : मुझे पढ़ना, खेलना और जंगल और शहर में घूमना पसंद है।

पंकज सिंह पांगती (13 वर्ष): मुझे फुटबॉल पसंद है। जंगली स्कूल में खेलने और मस्ती करने आता हूँ।

पवन ठाकुनी : मुझे फुटबॉल पसंद है। और जब मास्टर छोटी छोटी बातोँ पर मारते हैं तब अच्छा नहीं लगता।

प्रिया नितवाल (क्लास 4): मुझे खेलना पसंद है।

प्रिया रौतेला (क्लास 7): मैं प्रिंसिपल हूँ और सतमंडली की सदस्य हूँ जो जंगली स्कूल के निर्णय को लागू करती है। मुझे बॉक्सिंग पसंद है और एक दिन बॉक्सर बनकर अपने मम्मी पापा का नाम रोशन करना चाहती हूँ।

राहुल सुमतियाल (क्लास 7): मुझे फुटबॉल और कैरम पसंद है। मुझे अंदर से ज़्यादा बाहर रहना अच्छा लगता है लेकिन फिल्में पसंद हैं।

राजीव विश्वकर्मा (क्लास 11): मैं भी सतमंडली का सदस्य हूँ और मुझे नयी चीज़ें सीखना, फूटबाल, रिवर राफ्टिंग, स्नो स्कीइंग पसंद है। मैं एक नेवी अफसर बनकर अपने मम्मी पापा का सपना पूरा करना चाहता हूँ। मैं जंगली स्कूल में सीखने और मस्ती करने के लिए आता हूँ।

सचिन रावत (क्लास 11): मुझे फुटबॉल, स्विमिंग, घूमना, कैंपिंग और पार्टी करना पसंद है। मैं जंगली स्कूल में खेलने और मस्ती करने आता हूँ।

शीबा देसोर (क्लास 0): मुझे चलना, खाना और सोना पसंद है।

तनूजा नितवाल (क्लास 5): मुझे खेलना और रंग बिरंगी तस्वीरें बनाना पसंद है।

कहां कहां की कहानियां: हम सभी घूमते हैं पर हमारा एक ही जगह देखने का तरीका अलग हो सकता है।

साहसिक गाइड (महिमा रौतेला)
24 जून 2014

हमने सोचा कि हम खलिया जाएँगे। रात को नींद भी नहीं आ रही थी। ऐसा लग रहा था कि कब सुबह होगी और कब यात्रा में जाएँगे। जब सुबह हुई तो हम यात्रा पर निकले। तो सचिन, प्रकाश हमारे घर आऐ। फिर हम भानू दीदी के घर गए। हम 11लोग थे। फिर हम सब ने रास्ते मे अपने बोतलों मे पानी भर लिया। हम बुरगेड धार की ओर बढे। वहाँ बूढे अम्मा बुब्बू का घर था। गुड्डी दीदी ने उनसे मट्ठा माँगा। उन्होनें कहा कि उनके पास मट्ठा नहीं है। हम आगे बढ़े और हमने एक सुन्दर चिड़िया देखी (और हमने थोड़ी देरी बाद खाना खाया)। पवन ददा व उसके दोस्तो ने साँप देखा। हम लाल सिंग गेर पहुँचे और गुड्डी दीदी ने एक भैंस को चना खिलाया तो वह हमारे पीछे आने लगी और हम सब एक साथ तेजी से भागे। मै गिर गयी थी। भैस को भानू दीदी ने भगा दिया था। फिर हम आगे बढे। फिर पवन ददा लोगों ने मोनाल देखा और पवन ददा ने कहा कि मलिका नानी से शिकायत कर देंगे। फिर हम एक जगह पर बैठे और हमने जल जीरा चाटकर खाया और फिर हम आगे बढे और कुछ दूर चल कर हमें छोटा त्रिशूल वाला मंदिर दिखाइ दिया। वहीं कुछ दुरी पर हमें बकरियां दिखाइ दीं। फिर पवन लोग पानी पीने जा रहे थे। तो बकरी के अनवाल ने कहा कि वहां मत जाओ वहां पर बाघ है। उनकी बात को सुनकर ये लोग वापस आ गये। हम लोग आगे बढ़े। हम कुछ लोग टाँप में पहुचे। प्रिया लोग नीचे अम्मा बूबु के घर थे, अल्का दीदी वहाँ पानी लेने गयी। हमने खाना खाया और हम वापस आने के लिऐ तैयार थे। सचिन लोग आगे -२ जा रहे थे। फिर हमने सोचा कि उन्हे रास्ता पता है। भानू दी उन्हे कह रही थी वहां टी आर सी नहीं है फिर भी वह जिद्द कर रहे थे। भानू दी बोली कि मैं सबसे बड़ी हूं। अगर ये लोग खो जायेंगे तो मेरा ही नाम जायेगा। हम भी उनके पीछे-२ गये पर वो लोग आगे -२ जा रहे थे। रुक भी नहीं रहे थे। हम आगे फिसलते हुये गये फिर हमने पवन लोगों को देखा कि वो तो रास्ता भटककर नदी के किनारे बैठ थे और कह रहे थे कि रास्ता पता नहीं है। फिर भानू दी ने कहा कि हम वह पहाड़ी पार करेंगे और फिर हम सब भानू दी के पिछे-२ चले। भानू दी ने रिगांल की झाड़ियों को काटते हुये रास्ता बनाया और घने झाड़ियों के बीच से चट्टानो से लटकते हुये हम सब को सुरक्षित निकालते गयी। रास्ते में भालू का गोबर भी था। हम सब बहुत घबराये हुये थे पर हम सबने हिम्मत नही हारी। कुछ लोग रोये भी और हमे उपर से रोड दिखाइ दिया। हम सब खुश हुये। जल्दी से नीचे उतरे। हम लोग कालामुनी के आस पास पहुंचे थे। इतने में कल्लू मामा का गाड़ी आ रहा था। कुछ बच्चे दौड कर गये। गाड़ी रोकी और सब लोग गाड़ी में बैठ कर अपने -२ घर पहुचे। भानू दी ने उस जगह को देखा नही था फिर भी उन्हो ने हिम्मत दिखाया **हमे सुरक्षित घर पहुचाया इस लिये वो मेरी साहसी हिरो है।** धन्यवाद।

खलिया

यात्रा वृतांत खलिया (सचिन रावत)

2014 में जंगली स्कूल के सभी बच्चो ने फैसला किया कि हमे एक साहसिक यात्रा में जाना चाहिए। तब हमने फैसला किया की हमे खलिया जाना चाहिए। और हम खलिया जाने के लिए तैयार थे। खलिया जाने का रास्ता केवल भावना और मुझे पता था।

सुबह 6 बजे हमे भावना के घर पहुचना था। हम सभी सुबह का खाना और दोपहर का खाना लेकर खलिया की ओर चल दिए। सुबह का वक्त था और मौसम भी सुहावना था। भावना जी एक अलग रास्ते से ले जाना चाहती थी। पर मुझे भी एक अलग रास्ता पता था। जो वुरगेट धार से लेकर लाल सिह गेर तक का रास्ता था। सभी बच्चों का मानना था की हमे बब्लू के (मेरे) बताए रास्ते अथ्रात मैदानी रास्ते से जाना चाहिए। तब हम उसी रास्ते से गए। और लगभग एक बजे 7घन्टे चलकर हम खलिया पहुंचे। वहां का द्रश्य काफी सुन्दर था। वहां पहुचते ही ऐसा लगा कि जैसे हम स्वग्र पहुंच गए हो। सभी बच्चों का तो यह मानना था कि रात खलिया मे ही बिताया जाय। पर भावना जी जो काफी अनुभवी थी उन्हें ये सुझाव अच्छा नही लगा। और उसी दोपहर को हम घर आने के लिए तैयार हो गए। खलिया मे एक घास फिच होती है जो काफी लम्बी होती है। यह घास आग जलाने में प्रयुक्त होती है। यह घास बहुत ही तेज जलती है। हम नीचे आते समय उसी मे से फिसलते हुए आए। हम फिसलते फिसलते इतनी दूर आ गए कि रास्ता भटक गए।भटकने का फायदा यह हुआ कि हम सभी बच्चो ने मुग्रियो का एक विशाल झुन्ड तथा मोनाल भी देखा जो कि काफी दुल्रभ नजारा था। हम बच्चों का प्रतिनिधित्व एक बार फिर भावना जी करने लगी। हम सब की हीरो भावना जी थी। वे बड़े साहस से जंगलों मे रास्ता बनाती हुयी चल रही थी। हम सब ने भी उनका पूरा साथ दिया। तब इस एकता को देखकर ऐसा लगा मानो अब कोई भी समस्या या रूकावट आजाए हम सभी समस्या को पार कर लेगे। हमारी एकता और एक दूसरे के ऊपर विश्वास रखने से हम आखिरकार ऐसी जगह पर पहुंच गए जहां से सड़क दिखायी देने लगी।

एक बार फिर सभी बच्चों के जान मे जान आयी।और उसी जोश और उत्साह के साथ हम सरमोली बेंड तक पहुचे और वहा पर हमने बचा भोजन किया।और सभी लोगो ने ये फैसला किया कि इसके बारे मे किसी से नहीं कहेंगे और इस तरह हमने एक साहसिक यात्रा सरमोली से खलिया फिर खलिया से सरमोली तक 16 किलो मीटर 10 घन्टे लगातार चलकर पूरा किया।

पाताल भुवनेश्वर की यात्रा -पवन ठाकुनी

हम सब साथ में गये और रास्ते में एक जगह रोड बंद था। उस एक घंटे में हम नहाने के लिये गये। राजीव के क्विटी के रिश्तेदारों को मिले। वहां बहुत से केले थे। फिर टी आर एच गये और अगली सुबह सात बजे पाताल भुवनेश्वर के मंदिर पहुंचे। सब कुछ बहुत अच्छा लगा और मन में शांति की भावना आ रही थी। वापिस आते समय गंजोलीहाट में कालिका मंदिर गये। वह एक किलोमीटर तक फैला हुआ था। राहुल को यहां घंटी बजाने में बहुत मज़ा आया। हमें रास्ते में एक शव भी दिखा। एक किलोमीटर आगे एक तालाब था जिसमें हम नहाए। मुकेश तो डूबने ही वाला था पर जन्नु दा ने उसे बचा लिया। फिर हमने कुछ अमरूद खरीदे। मुझे सबसे अच्छा लगा जब मोटर साइकल वाले ने स्टंट किया। जन्नु दा ने अच्छे से गाड़ी चलाई और पहली बार मुझे गाड़ी में उल्टी नहीं लगा। हम रात को घर पहुंचे और मेरा टिफिन गाड़ी में ही छूट गया। हमें रास्ते में एक शराबी भी दिखा जो रोड पर बोतल फेंकता जा रहा था। हम मलिका ताईजी को धन्यवाद देना चाहते हैं कि उन्होंने हमें इस यात्रा का मौका दिया।

पाताल भुवनेश्वर के मंदिर में- अल्का रौतेला

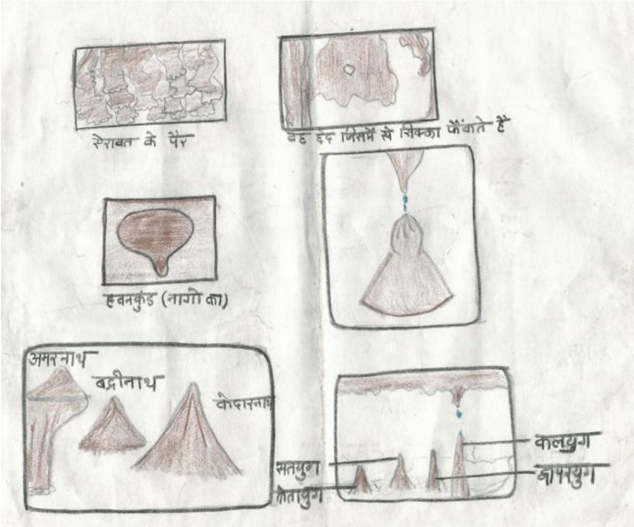

मुनस्यारी से पाताल भुवनेश्वर जाने में 8 घंटे लगते हैं। पाताल भुवनेश्वर पहुँचते ही एक बड़ा बोर्ड दिखाई देता है जिसमें बड़े बड़े शब्दो में पाताल भुवनेश्वर लिखा है। गुफे में जाने से पहले टिकट कटवाना पड़ता है। गुफे के अंदर जाते समय कोई भी अपने साथ मोबाईल, कैमरा आदि चीज़ें जिससे फोटो या विडियो बनाते हैं वह नहीं ले सकते है। गुफा में जाने का प्रवेश द्वार बहुत छोटा है। गुफे में घुसने पर सीढीयाँ सीधे नीचे की ओर हैं और सीढीयाँ बहुत चिकनी है, उसमें से नीचे उतरते समय चेन को पकड़ना पड़ता है, तांकि कोई गिरे न। गुफे में हर जगह बिजली की सुविधा है। जब सीढीयो से उतर जाते है तो ऐसा लगता है जैसे किसी कमरे मे खड़े हैं। हमें गाइड ने एक जगह इशारा करते हुए बताया कि वह नागों का हवनकुंड है और दिवार पर कुछ साँप की तरह आकृतियाँ बनी हैं वह करोड़ो साँप हैं। गाइड ने हमें एक जगह बुलाया और सबको एक साथ खड़े होने के लिए कहा और उसने बताया कि हम कालिया नाग के पेट में खड़े हैं और उसके ऊपर कालिया नाग का जीभ दिखाई देता है। थोड़े आगे जाने पर एक दिवार सा छेद है इसकी यह मान्यता है कि अगर कोई भी उस छेद में एक सिक्का फेंकेगा और पहली बार में ही वह उसके पार चले जाएगा , उस समय वह जो भी भगवान से मांगेगा वह उसे मिल जाता है। उसी के पास उल्टे छत की ओर हाथी के पैर की तरह बहुत सारी आकृतियाँ बाहर उभरी हुई दिखाई देती है और हमें बताया गया कि वह सारे पैर इंद्र देव के हाथी ऐरावत के हैं। आगे की ओर बढ़ने पर दो दिशाओं की ओर जाने वाले द्वार दिखाई देते है। एक द्वार को स्वर्गद्वार, दूसरे को नरकद्वार कहते है और सभी की तरह हम भी स्वर्गद्वार से आगे बढे। तो गाइड ने ऊपर की ओर इशारा करते हुए बताया कि यहां 6 ऋषि- कश्यप, अत्रि, भारद्वाज, गौतम, जमदग्नि और वशिष्ठ ऋषि थे और उनके ठीक बगल में ही एक छोटा सा गुफा है जिसमें कुछ इन्सान की तरह काली आकृति

दिखाई देती है। हमें बताया कि यह ऋषि विश्वामित्र की परछाई है जो वहाँ बैठकर तप कर रहे है। आगे बढ़ने पर हमें कुछ श्री गणेश की तरह आकृति दिखाई दी जिसमें ऊपर से पानी टपकता है। गाइड ने बताया कि जब शिवाजी ने गणेश जी का सिर धड़ से अलग कर दिया था तो उन्हें जिंदा रखने के लिए उनको जल दिया जा रहा था। उसके पास ही तीन छोटे-छोटे पहाड़ बने हुए हैं जिसे तीन धाम के नाम से जाना जाता है केदारनाथ, बदरीनाथ और अमरनाथ। आगे बढने पर एक हंस की आकृति दिखाई देती है जिसका सिर मुड़ा हुआ लगता है तो हमें बताया कि यह एक हंस है जिसका सिर विष्णु भगवान ने मोड़ दिया क्योकि उस हंस को सात पवित्र कुंडो की रक्षा का दायित्व दिया और उस हंस से कहा कि इन कुंडो के पानी को मत पीने देना लेकिन एक दिन हंस को बहुत प्यास लगी थी और उसने एक कुंड का पानी पीकर उसे जूठा कर दिया तो विष्णु जी ने उसका सिर तालाब से पीछे की ओर मोड़ दिया। आगे की ओर बढ़ने पर एक बड़ी सी सफेद और काली आकृति दिखाई देती है और गाइड ने बताया कि यह शिवजी की जटाएँ है और उन जटाओ से धीरे धीरे पानी टपकता है और उसके टपकने से वहाँ पर छोटा सा कुंड बन गया है। उसके ही नीचे बहुत सारे छोटे छोटे पत्थरो में अब भी पानी फेकने पर वह पानी सोख लेते हैं। आगे बढने पर हमें गाइड ने बताया कि अब गुफे का यह आखिरी छोर है और पाताल भुवनेश्वर की देवी का मंदिर है। लेकिन वहाँ से आगे की ओर भी एक गुफा था लेकिन गाइड ने कहा कि आगे जाना मना है। हमारे पूछने पर बताया कि आगे गुफे में ऑक्सीजन की कमी है इसलिए हम वापस आ गये। जब वापस आ रहे थे तो एक जगह पर तीन छोटी-छोटी चोटियाँ बनी हुई देखी लेकिन एक उनमें से काफी लंबी चोटी है जिसे कलयुग कहते हैं। उस चोटी के ऊपर पानी टपकता रहता है और वह धीरे धीरे बढ़ता रहता है। यह कहा जाता है कि अगर उसका नोक ऊपर जुड़ जाएगा जहाँ से पानी टपकता है तो इस युग का विनाश हो जाएगा। इसके अलावा बाकी तीन चोटियो को तीन युग सतयुग, त्रेता और द्वापर युग कहा जाता है।

इसी के साथ हमारी पाताल भुवनेश्वर की यात्रा खत्म हो जाती है।

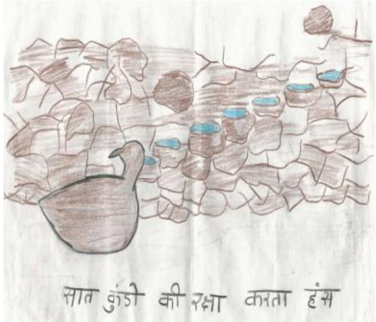

रूपकुंड की कहानी- त्रिलोक (तिल्लू)

आज मैं धन्यवाद कहना चाहूंगा मलिका दीदी और राम दा, थियो सर को जिनके कारण मै रूप कुण्ड गया और धन्यवाद देना चाहूगा जंगली स्कूल के सभी साथियो को जो अपनी कहानी लिखने जा रहे हैं।

जब हम 21 अक्टूबर को वांन से निकले तो गांव की वेश भूशा आज भी वही पुरानी जो पहले हुआ करती थी। वहां महिलाएं घाघरा पहने हुए थीं और पुरुषो ने ऊन के कोट और पैजमा और उसके ऊपर से काला पट्टी लपेटे हुए थे जो बहुत अच्छे लग रहे थे। जब हम वेदनी पहुंचे तो चारों तरफ बुग्याल ही बुग्याल थे और उन बुग्यालों के बीच मे एक सुन्दर कुण्ड बनाया गया था जो बहुत सुन्दर था।

यहां पर वन विभाग ने 10से 12 हट बनाये हैं जिसमें आते जाते लोग रहते हैं। मैं भी पहली बार हट पर सोया जो बहुत अच्छा लगा। फिर अगले दिन वेदनी से पाथर नाच्यूना गये जहां बहुत तेज हवा चलता रहता है और चारों तरफ कोहरा था। अगले दिन मैं सुबह उठकर बाहर आया तो चारों तरफ बर्फ की सुन्दर- सुन्दर पहाड नज़र आ रहे थे जो बहुत ही

अच्छे थे। फिर हम भोगू भासा के लिए निकले। आधे रास्ते में हमे बरर और लामागैर दिखे जो बहुत अच्छे दिख रहे थे।
फिर हमे गणेश भगवान का मन्दिर मिलता है जहां 2फीट बर्फ मिलता है और फिसलन बहुत था, जिसके चारो तरफ बर्फ की चांदर बिछा हुआ था। जब हम भोगू भासा पहुंचे तो बहुत ही ठण्डा था। रात को सोने के बाद जब मैं सुबह उठा तो देखा मेरा स्लीपिंग बैंग गीला हो गया था और ठण्ड भी बहुत था और चाय पीने के बाद हम रुप कुण्ड के लिए निकले। हमारे साथ घोड़े वाला था जो बहुत ही फिसल रहा था। जब हम रूप कुण्ड पहुंचे तो कुण्ड तो नहीं दिखा क्योंकि चारों तरफ बर्फ था मगर खुश किस्मत था जो मानव की हड्डियां दिखे जिसे पत्थरों पर रखा गया था। जिसे देखने के लिये लोग बहुत दूर-दूर से आते हैं।
फिर हम शीला समुन्दर जगह गये जो रूप कुण्ड से 20मिनट का रास्ता है जहां से बहुत सुन्दर पर्वत दिखते है और जब हम वांन लौट रहे थे तो हमे वेदनी बुग्याल मे 6इंच बर्फ गिरा जो बहुत अच्छा था।
तो य़े है मेरी रूप कुण्ड की कहानी।

मुन्स्यारी के बारे में

हमारे धरोहर (कविराज पाण्डेय)

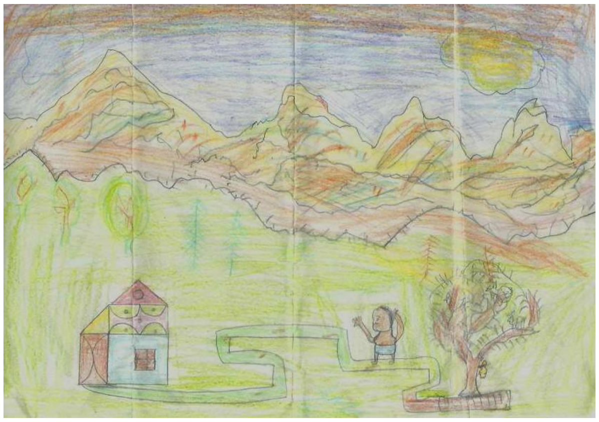

खलिया का बुग्याल, उत्तर दिशा में हंसलिंग राजरंभा तो दक्षिण दिशा की ओर घना घनघोर थुनेर, खरसु तिमसु का जंगल, उसके बीच थामरी का कुण्ड। मानो प्राकृति ने अपना सारा सौन्दर्य यहीं लाकर बिछा दीया हो। हरे-भरे बुग्याल, चमकती हिमालय, इनके बीच से निकलने वाली नदियाँ गोरीगंगा आदि जो कानों को तृप्त करऩे वाली हैं। इऩका संगीतमय धुऩ किसको भावविभोर न कर देगा।

अनेक प्रकार की औषधियों से भरपूर हिमालयी बुग्याल। कस्तुरी मृग, थार, वरड़, सफेद भालू , हिमालयी दुर्लभ याक जैसे जानवर व हमारे यहाँ के पक्षी जिसे वन मुर्गि के नाम से जाना जाता है। जिनमें मोनाल, लौंग, चेड़, पिय्ड़, तीतर आदि शामिल हैं। अनेक प्रकार के पक्षी व पेडों में थुनैर, भोज, पय, विल्ल, सुरई, बुराँश आदि को एक धरोहर के रुप में देखा जाता था।
परंतु आज बदलते समय के कारण हर प्रकार के वनस्पती आदि के दोहन के कारण इसका पर्यावरण पर बुरा पभाव देखने को मिल रहा है। जहाँ जंगलों का दोहन हो रहा है, वहाँ जलस्त्रोत सूख रहे हैं तथा लोग जंगली पशु पक्षीयों का शिकार काफी कर रहे हैं जिससे वे विलुप्त होने की कगार पर हैं तथा जिससे सौन्दर्य बिगड़ रहा है। असमय वर्षा, जंगल का कटान, खनन, बाँध बनाने- जिससे लोगों को विकास के साथ विनाश का सामना करना पर रहा है। आज हमें जरुरत है जागरुक होने की कि हमारा जल जंगल, ज़मीन आदि सुरक्षित रहे। अगर हमें इन अमूल्य धरोहरों की रक्षा करनी है तो उचित ध्यान देने कि ज़रुरत है। वरना हमारा यह सुन्दर इलाका आने वाले समय में एक विस्मरणीय कहानी बनकर रह जायेगा।

हमारा मुन्स्यारी (निशांत पांगती)

मेरा नाम निशांत है। मैं सरमोली में रहता हूं। सरमोली जाने के दो रास्ते हैं- मदकोट से और कालामुनी से। यहां बहुत से छोटे-बड़े देवस्थल हैं।

कई जातियों और धर्मों के लोग यहां रहते हैं। मुन्स्यारी में कई गांव हैं जैसे-सरमोली, शंखधुरा, नानासेम, नयाबस्ती, सुरिंग, जैती गांव। यहां लोग गाय, भैंस, बकरी, भेड़, घोड़े, खच्चर से जुड़ा पशुपालन करते हैं। वह कुत्ते-बिल्ली भी रखते हैं। कुछ लोग मुर्गी और मछली भी रखते हैं। यहां ऊन और खेती से जुड़े बड़े-छोटे उद्योग हैं। मुन्स्यारी से मीलम ग्लेशियर का रास्ता आसान भी है और मुश्किल भी। मुन्स्यारी में शेर सिंह पांगती ने यहां की पिछले 50-100 साल की संस्कृति को किताबों और म्युज़ियम के द्वारा सम्भाला है। बर्फ से ढका पंचचुली मुन्स्यारी से बहुत सुंदर दिखता है। यहां कैम्पिंग के बहुत से स्थान हैं। टूरिस्ट होटल भी हैं। यहां सीढीनुमा खेती होती है। यहां के लोग बहुत ही सभ्य हैं।

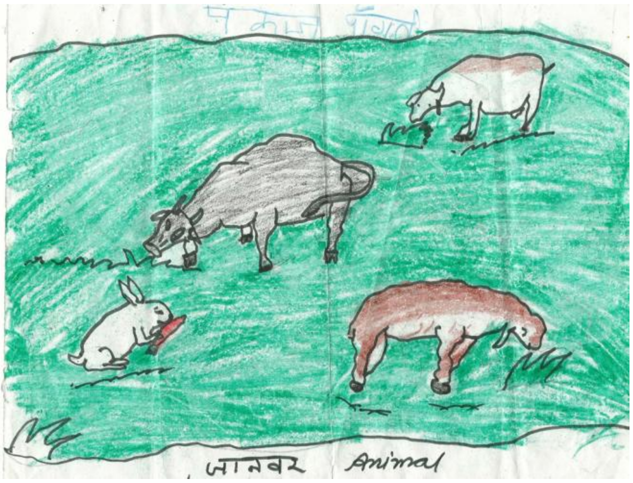

ऊपर- पंकज पांगती, नीचे- अल्का रौतेला

मुन्स्यारी (राजीव विश्वकर्मा)

मुन्स्यारी का दृश्य सारा
यारों है वे इतना प्यारा
जहां भी देखो सुन्दर लगते
सबके मन मे खूशियां भरते
सारे देशों से लोग यहां घूमने आते
देश अपने जाकर
मुन्स्यारी की बातें बतलाते

मुन्स्यारी है इतना सून्दर

यारों मेरे मुन्स्यारी आओ
कुकला, भुमला और तुम खाऔ
ज्या सत्तू तो इतने अच्छे
खाते है सब बच्चे बच्चे

और अधिक मैं क्या बताऊं
मुन्स्यारी आओ, तुम्हें घुमाउं
मुन्स्यारी है इतना सुंदर
बस जाये यह मन के अंदर।

बिरबल की खिचड़ी (अल्का)-एक पुरानी कहानी

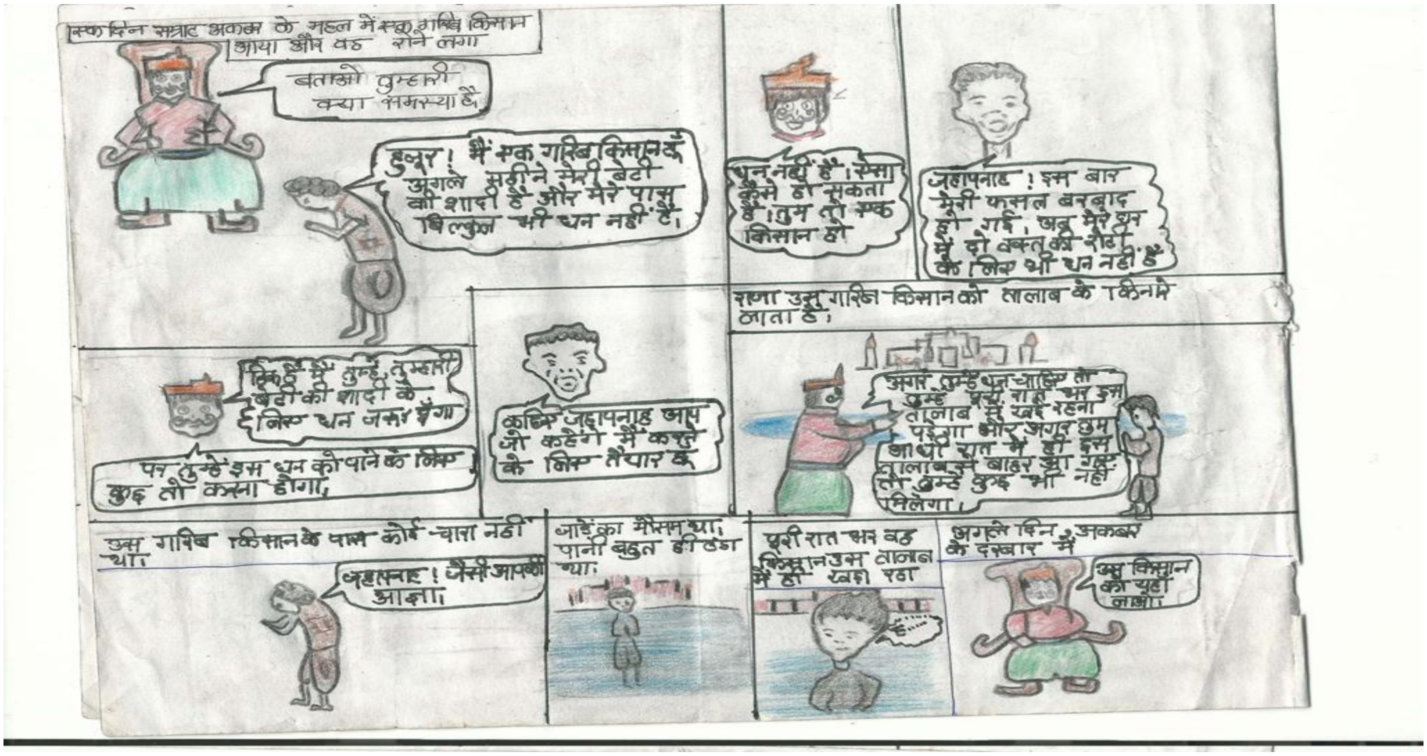

गलती का अहसास (राजीव विश्वकर्मा)

एक गांव में एक महिला और उसके दो बच्चे रहते थे। पिता के गुज़रने के पश्चात बच्चों की मां उनकी अंधे की लाठी बन गयी। मां ने बर्तन मलकर दोनो बच्चों को पढाया। एक बार उसके बडे बच्चे के गिर जाने से आंख की रोशनी चली गयी। गरीब निर्धन मां के पास पैसे नहीं थे पर मां ने अपनी एक आंख अपने बेटे को दे दी। बेहोशी के कारण बेटे को इस बात का पता न था। तथा कुछ समय के बाद दोनो बेटों की नोकरी लग गयी। उनकी मां फूली न समायी। उसके पश्चात दोनों बेटों का ब्याह हो गया। दोनो बेटे अपने परिवार के साथ गाव से दूर शहर में रहने लगे। निर्धन महिला पहले की तरह जीवन यापन करती थी। परन्तु एक समय ऐसा आया जब महिला बूढी हो गयी व स्वास्थ बिगड़ने के कारण महिला को पानी पिलाने के लिये भी कोई भी न था। महिला ने अपने दोनो बेटों को

पत्र लिखाकर कुछ समय के लिये घर आने को कहा। परन्तु अब दोनो बेटे बदल गये थे वे घर नही आये। पर मां ने कुछ रूपये इकट्ठा कर बेटे के पास जाने का निर्णय लिया। बच्चों की याद मां को वहां तक ले गयी। मां ने अपने बेटे से मिलने को कहा परन्तु बेटे ने मां को पहचानने से इन्कार कर दिया। क्योंकि बुढी महिला अस्वस्थता तथा एक आख के अभाव के कारण भद्दी लग रही थी। बेटे ने मां को मां बताने मे शर्म महसूस किया क्योंकि वह काफी धनी बन चुका था। दूसरे बेटे से अपमानित महिला की जल्द ही मत्यु हो गयी। बेटों के पास अन्तिम संस्कार के लिये भी वक्त न था। महिला के मत्यु के पश्चात किसी कार्ऱण कार्य के लिये उन्हें अपने गांव आना पडा। तब गांव वालो से मां के एक आख न होने का कारण पता चला तथा बचपन के दिन याद आये तथा उन्हे अपने गलती का ऐहसास हुआ। तब से वे हर वर्ष में एक बार गांव आने लगे तथा अपने से बड़ों के लिये फल, अन्य जगहों की तसवीरें, कहानीयां लाने लगे तथा गांव के कार्यो मे अपना सहयोग देने लगे। उन्हें गलती का ऐहसास तो हुआ परन्तु देर से। अब पछतायत होत क्या जब चिडिया चुग गयी खेत?

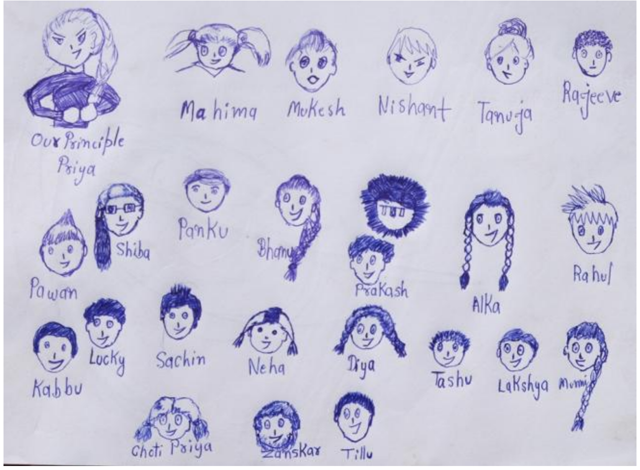

ऊपर: जंगली स्कूल के कुछ सदस्य- अल्का

चुटकुले (राजीव विश्वकर्मा):

बच्चा : साधू बाबा, मुझे एक ऐसा मंत्र दीजिये जिससे मैं महान व्यक्ति बनूँ।
साधू बाबा: बेटा इन दो मन्त्रों को सोने के बाद और उठने से पहले निरंतर जप करना।

हेलीकॉप्टर में बैठे एक मित्र ने पूछा: यहां से यमराज का घर कितना दूर है?
दूसरा मित्र: 500 किलोमीटर
मित्र: नहीं 1000 किलोमीटर
तीसरा मित्र: रुको। मैं नीचे कूदकर पता लगा कर आता हूँ।

नाविक: मित्र! नाव में छेद हो गया है, पानी अंदर आ रहा है, क्या करें?
मूर्ख: रुको, मैं नाव में दूसरा छेद करता हूँ, पानी बाहर चला जायेगा।

सुनील: भैया, मुझे गिटार चाहिए।
भाई: नहीं, तुम मुझे दिन भर परेशान करोगे।
सुनील: जब आप सो लेंगे तब ही गिटार बजा लिया करूँगा।

ट्रैफिक पुलिस: रुको! अँधेरे में बिना लाईट के गाडी चलाते हो!
ड्राइवर: इसलिए तो साइड में (किनारे किनारे) चला रहा हूँ।

चोर (एक चमच मिर्च पकड़ कर): मिर्च लेलो, मिर्च लेलो)
व्यक्ति: इतनी सी मिर्च से क्या होगा?
चोर: आँख में जायेगा तो सब पता चल जायेगा

एक बार एक व्यक्ति की सब्ज़ी को गाय खा देती है।
व्यक्ति: गधे हो क्या?
मालिक: गधे तो तुम हो जो गाय को गधा कहते हो।

राम: सीता सुन्दर लड़की है। इसका भविष्य काल क्या होगा?
रमेश: भगाकर ले जाऊंगा।

अधिकारी (पुस्तक देखते हुए): धनुष किसने तोडा था?, छह बच्चों से पूछा। सातवें से पूछने पर: इतने बच्चे हैं, इनमें से किसी एक ने तोडा होगा।

ट्रैफिक पुलिस की मृत्यु के पश्चात यम दरबार में
यमराज: तुम्हें स्वर्ग जाना है या नरक?
ट्रैफिक पुलिस: स्वर्ग
यमराज: क्यूँ?
ट्रैफिक पुलिस: क्यूंकि यहां ट्रैफिक रूल अधिक नहीं बताना पड़ेगा। क्यूंकि स्वर्ग में अच्छे लोग होते हैं।

मेरा बचपन(राजीव विश्वकर्मा):

मेरा बचपन कितना अच्छा
इतना सच्चा कितना अच्छा
मां का लाडला
बड़ा ही निराला
दादी दादी का वह प्यारा
मा पिता का राज दुलारा
बचपन मेरा कितना अच्छा

सबके मन मे प्यार भर लाता
बचपन की याद उन्हे दिलाता
छोटे छोटे काम मैं करता
सबके मन में खुशियां भरता
मोटर गाड़ी तब मैं चलाता
दादी दादा को मैं रूलाता
बचपन मेरा कितना अच्छा

इतने में पापा आ जाते
कान पकड मुझको बिठलाते
कापी देख के फिर मे कांपूं
इतने मे ही दूर मैं भागूं

तब खेल मे खो जाता था
इतने मे ही सो जाता था
बचपम मेरा कितना अच्छा

सोने के बाद जल्द उठ जाऊं
खीर खाना खूब मैं खाऊं
बाल मन होता इतना सच्चा
बचपन मेरा सबसे अच्छा

बचपन होता कितना प्यारा
याद रखे सब जीवन सारा

स्पोर्ट (प्रिया रौतेला)

स्पोर्ट बहुत प्रकार के होते हैं। जैसे फुटबोल, क्रिकेट, बोक्सिंग। यह सेहत के लिए अच्छे होते हैं। ज़िंदगी को आसान बनाते हैं।

फुटबोल में 11 खिलाड़ी होते हैं। 9 खेलते हैं। 2 ऐक्स्ट्रा होते हैं।

वोलिबोल में एक तरफ 12 खिलाड़ी होते हैं। 6 खेलते हैं और 6 ऐक्सट्रा होते हैं।

क्रिकेट में एक तरफ 15 खिलाड़ी होते हैं। 11 खेलते हैं और 4 ऐक्सट्रा होते हैं।

बोक्सिंग एक अलग खेल है। एक तरफ 1 खिलाड़ी होता है। बोक्सिंग 2 लोगों में होती है। 1 से 10 तक गिनते हैं।

फुटबोल वोलिबोल का रिश्तेदार समझ सकते हैं। अंतर है कि फुटबोल में हाथ नहीं लगाते, पैरों को यूस करते हैं। वोलिबोल में हाथ यूस करते हैं। दोनो आसान खेल हैं।

क्रिकेट भी आसान है। क्रिकेट में पूरा शरीर यूस होता है। बैट-बोल यूस होता है। क्रिकेट में स्टम्प दोनो तरफ होता है। तीन तरह से आउट हो सकते हैं। पहला कैच आउट, दूसरा रन आउट, तीसरा स्टम्प से सीधा आउट।

बोक्सिंग आसान नहीं है। बोक्सिंग में पूरे शरीर का काम होता है। मुझे बोक्सिंग पसंद है क्युंकि वह एक सुंदर खेल है। मुझे खेल बहुत पसंद है।

ऊपर- (जंगली स्कूल की लाइब्रेरी में एक संडे की गेम) -अल्का

अलग अलग खेल- पवन

हम अपने गांव में और जंगली स्कूल में बहुत से खेल खेलते हैं। जैसे कि जंगली स्कूल में कैरम, फुटबोल, वोलीबोल, स्विमिंग और गांव में क्रिकट, बेसबोल, फुटबोल और बैडमिन्टन खेलते हैं। स्पोर्ट एक ऐसी भावना है जो हमें टीम स्पिरिट और एकत्रता सिखाती है। खेल दो प्रकार के होते हैं- इनडोर, आउटडोर। फुटबोल मेरा सबसे पसंदीदा खेल है। एक बार जब मैं फुटबोल खेल रहा था एक लड़का गिरा और कोनी की हड्डी टूट गयी।

लड़का दर्द से चिल्लाया। ऐसा लगा उसे काफी दर्द हो रहा होगा। हमारा कोच उसे तुरंत हस्पताल ले गया और उसके इलाज के लिये पैसा दिया। कोच की उदारता लड़के के दिल को छू गयी। कोच उसे उसके घर भी ले गया। कुछ समय बाद वह लड़का ठीक हो गया और फिर खेलने लगा। मुझे भी खेलना पसंद है और सभी को स्पोर्ट का आनंद लेना चाहिए। आपको भी इसमें मज़ा आएगा, एक बार खेल कर तो देखें। (एक राज़: वह लड़का पवन ही था !)।

नैन राम- गोरी घाटी में रिंगाल के कलाकार

(भावना/ भानु)

श्री नैन राम जी इस घाटी में रिंगाल के आखरी कलाकारों मे से एक हैं और अपनी कला के नाम से जाने जाते हैं। इनका जन्म सन् 1962 में मुनस्यारी के जैंती गाँव में हुआ था। इनकी शिक्षा केवल दूसरी कक्षा तक हुई है। गरीबी के कारण ये आगे पढ़ नही पाये। इनके परिवार में रिगांल की यह कला काफी समय से चलती आ रही है। इनके दादाजी और पिताजी रिगांल के डलिया और चटाई बनाते थे। उन्हें हमेशा से ही इस काम में दिलचस्पी थी और बचपन में गाय चराते जाते समय भी वह रिंगाल से कुछ बनाने में लगे रहते। इनके पिताजी इनको रिगांल नही देते थे और नैन जी रिगांल चोरी करके बनाते थे।
18साल की उम्र में उन्होने गरमपानी गांव में रिगांल की ट्रेनिंग ली और धीरे -धीरे इनके हाथो में अच्छी कलाकारी आने लगी और उसके बाद वे खुद ही रिगांल का कार्य करने लगे। उसके बाद लखनऊ में कला प्रदर्शनी में गए जहां पर अपनी कला दिखाने के लिए बहुत लोग आए थे। उनकी कलाकारी वहां भी रंग ले आयी और इन्होनें दूसरा स्थान प्राप्त किया और उन्हे 200रूपये का ईनाम दिया गया जो उनके लिए गर्व की बात थी। उस समय में तो 200 रूपया बहुत बड़ी बात होती थी। फिर डोगे, डलिया, चटाई बनाने के साथ- साथ मजदूरी का काम भी किया करते थे। जब नैन जी 21 साल के थे तब उनकी शादी हो गयी। इस तरह से घर का सारा खर्चा उनके ऊपर आ गया। जिससे उनको दिन भर मजदूरी का काम करना पड़ता था और समय मिलने पर लोगों का डलिया चटाई और डोगे बनाते थे। जब वे 35 साल के हुए तो इन्होने मजदूरी छोड़कर रिगांल पर ही अपना ध्यान लगाया। लोग उन्हे घर-घर बुलाने लगे जहां वे एक सप्ताह से दो सप्ताह उनके घर रहते हैं और उनके डोगे, चटाई, डलिया बनाते हैं । नैन जी आज अपने इस काम के लिए मशहूर हैं और दूर - दूर से लोग इन्हे बुलाने आते हैं। आज नैन जी 53साल के हो गये हैं और हर साल दुम्मर में प्रदर्शनी के दौरान वे प्रथम स्थान पे आते हैं। अपने इस कलाकारी के कारण आज उन्हे हर कोई जानता है।
लेकिन नयी पीढी यह काम नहीं करती है। रिंगाल के साधन जैसेकि पुटकु, ढोका, डोग, आदि की जगह अब प्लास्टिक और धातु के साधनों ने ले ली है जिस कारण रिंगाल की बुनी वस्तुएं कम ही मिलती हैं। हमारी यह आशा है कि रिंगाल की बुनी सुन्दर वस्तुओं की सराहना होगी। कुछ युवाओं को

शायद प्रेरणा मिले कि वह नैन बुबु से इस कला को सीखें। नहीं तो यह कला कहीं खत्म न हो जाए।

पत्रिका के बारे में

यह पत्रिका हमारा अपने टीचर, मम्मी-पापा और दोस्तों को धन्यवाद करने का तरीका है। उनसे अपनी कहानियां बांट कर। इसे हमने कई हफ्तों में संडे को मिलकर बनाया। यह अंग्रेज़ी और हिन्दी दोनो में है। आपको यह कैसा लगा हमें ज़रूर बताएं।